Answer-No-7

बायलर ⇒ बायलर या भाप जनित्र वह युक्ति है जिससे ईंधन दहन के पश्चात ~~[illegible]~~ अपनी उष्मा को बायलर टैंक के जल को आन्तरिक करके उच्च दाब व ताप पर वाष्प पैदा की जाती है।

बायलर एक ऐसा पात्र होता है। जिसकी क्षमता कम से कम 10 गैलन से अधिक हो और जिसका उपयोग शुद्धतापूर्वक वाष्प उत्पादन के लिए किया जाता है।

कार्करन बायलर ⇒ कॉकरन बायलर एक खड़े बेलनाकार खोल के समान एव गुम्बनुमा आकृति का होता है। इस गुम्बद-नुमा आकृति के सबसे उपर उष्मा को ~~चिम~~ चिमनी द्वारा वायुमण्डल में निकलने कि व्यवस्था होती है। इसका शीर्ष अर्द्ध गोलीय आकार

का होता है। खोल के निचले भाग पर भट्ठी होती है। इसमें राख गर्त तथा जाली बनी है दग्ध गैसों को उष्मा अग्नि-नालियों को अन्तरित की जाती है। जिससे खोल में भरा पानी गर्म होता है। और भाप बनती है। रोक-वाल्व के द्वारा खोल के अर्द्ध-शीर्ष भाग में भाप एकत्र हो जाती है। चिमनी में एक डैम्पर लगा होता है। जो प्रभाव उत्पन्न करके भट्टी में वायु के चूषण के नियंत्रण के साथ-साथ फ्लू गैस के निकास का भी नियंत्रण करता है।